बरसीम की खेती

बरसीम हरे चारों अपने गुणों द्वारा दुधारू पशुओं के लिये प्रसिद्ध है। उत्तरी/पूर्वी क्षेत्र में मक्का या धान के बाद इसकी सफल खेती होती है।

भूमि :

दोमट तथा भारी दोमट अधिक उपयुक्त है। बरसीम के लिए अम्लीय मृदा अनुपयुक्त है।

भूमि की तैयारी :

खरीफ की फसल के बाद पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से फिर 2-3 बार हैरो कल्टीवेटर चलाकर मिट्टी भुरभुरी कर लेना चाहिए। बुवाई के लिए खेत को लगभग 4 × 5 मी. की क्यारियों में बॉट ले।

उन्नतिशील प्रजातियॉ

क्र.सं.	प्रजातियाँ	हरा चारा (कु.हे.)	उपयुक्त क्षेत्र
1.	वरदान	900-1000	सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश
2.	मेस्कावी	800-900	सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश
3.	बुन्देलखण्ड बरसीम (जे.एच.बी-146)	900-1100	सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश
4.	बुन्देलखण्ड बरसीम (जे.एच.टी.बी.-146)	950-1100	सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश का पश्चिमी व पूर्वी क्षेत्र
5.	बी.एल.-10	1000-1200	पश्चिमी उत्तर प्रदेश।

बुवाई का समय :

बुवाई 15 अक्टूबर से 15 नवम्बर तक करना ठीक रहता है। देर से बोने पर कटाई की संख्या कम और चारे की उपज प्रभावित होती है।

cqokbZ dh fof/k %

तैयार क्यारियों में 5 सेमी. गहरा पानी भरकर उसके ऊपर बीज छिड़क देते है। बुवाई के 24 घण्टे बाद क्यारी से जल निकास कर देना चाहिए।

जहां धान काटने में देर हो वहां बरसीम की उतेरा खेती करना उचित है। इसमें धान कटने से 10:15 दिन पूर्व ही बरसीम को खड़ी फसल में छिड़काव विधि से बुवाई करते है।

बीज दर

प्रति हेक्टेयर 25-30 किग्रा. बीज बोते है। पहली कटाई में चारा की उपज अधिक लेने के लिए 1 किग्रा./हे. चारे वाली टा-9 सरसों का बीज बरसीम में मिलाकर बोना चाहिए।

बीजोपचार :

प्रायः बरसीम के साथ कासनी का बीज मिला रहता है। मिश्रित बीज को 5-10 प्रतिशत नमक के घोल में डाल देने से कासनी का बीज ऊपर तेरने लगता है। इसे छानकर अलग कर लेते है। बरसीम के बीज को नमक के घोल से तुरन्त निकाल कर साफ पानी से अच्छी तरह धोले। यदि बरसीम की किसी खेत में पहली बार बुवाई की जा रही है तो उसे प्रति 10 किग्रा. बीज को 250 ग्राम बरसीम कल्चर की दर से उपचारित कर ले। कल्चर के न मिलने पर बरसीम के बीज के बराबर मात्रा में

पहले बरसीम बोठ गई खेत की नम भुरभुरी मिट्टी मिला लेते है। मृदा उपचार हेतु ट्राइकोडर्मा को 2 किग्रा. प्रति एकड़ से प्रयोग करें तथा 4 ग्राम प्रति किग्रा. बीज की दर से बीजोपचार करें।

उर्वरक :

20 किग्रा. नत्रजन एवं 80 किग्रा. फास्फोरस प्रति हेक्टेयर की दर से बोते समय खेत में छिड़क कर मिट्टी में अच्छी तरह मिला दें।

सिंचाई :

पहली सिंचाई बीज बंकुरा के तुरन्त बाद करनी चाहिएं बाद में प्रत्येक सप्ताह के अन्तर पर 2-3 बार सिंचाई करनी चाहिए। इसके पश्चात फरवरी के अन्त तक बीस दिन के अन्तर पर सिंचाई करें और मार्च से मई तक 10 दिन के अन्तर पर सिंचाई करना आवश्यक होगा। साधारणतः प्रत्येक कटाई के बाद सिंचाई अवश्य की जानी चाहिए। एक बार में लगभग 5 सेन्टीमीटर से ज्यादा पानी नहीं देना चाहिए।

कटाई :

कुल 4-5 कटाई करते है। 6-8 सेमी. ऊपर से करना चाहिए।

पहली कटाई	-	बोने के 45 दिन पर
दिसम्बर एवं जनवरी में	-	30-35 दिन बाद
फरवरी से	-	20-25 दिन के अन्तर पर

बीजोत्पादन :

बरसीम की 2-3 कटाई के बाद कटाई बन्द कर दें। फरवरी का अन्तिम या मार्च का प्रथम सप्ताह उपयुक्त है। अन्तिम कटाई के 10-15 दिन तक सिंचाई रोग देना चाहिए। अधिक बार कटाई करने से बीज का उपज कम एवं कमजोर होती है।

उपज :

प्रति हेक्टेयर 80-100 टन हरा चारा प्राप्त होता है। 2-3 कटाई के बाद बीज 2-3 कुन्तल/हे. एवं 40-50 टन/हे. हरा चारा मिल जाता है।